पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 1.05.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

आर्य कन्या शिविर का भव्य उद्घाटन

सोमवार, 12 मई 2014,
प्रात: 10 बजे
आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव,
पीतमपुरा, दिल्ली
आप सादर आमन्त्रित हैं
-उर्मिला आर्या, संयोजक

वर्ष-30 अंक-23 वैशाख-2071 दयानन्दाब्द 190 1 मई से 15 मई 2014 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 1.05.2014, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक ''दयानन्द भवन'' में सम्पन्न

युवा शक्ति को संस्कारित करने के लिये 18 शिविरों का आयोजन किया जायेगा

संस्कारित, चरित्रवान युवा शक्ति ही राष्ट्र का भविष्य - डा.अनिल आर्य

''आर्य सभा'' का जनता पार्टी में विलय करना हमारी भूल थी -स्वामी अग्निवेश

बैठक को सम्बोधित करते डा. अनिल आर्य, बायें से स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री रामकुमार सिंह, श्री दर्शन अग्निहोत्री व श्री महेन्द्र भाई जी। द्वितीय चित्र में श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री वेदप्रकाश मिगलानी, श्री एच.सी.अरोड़ा का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, श्री यशोवीर आर्य, श्री महेन्द्र भाई, श्री रामकुमार सिंह जी।

नई दिल्ली। रविवार, 27 अप्रैल 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी व सक्रिय कार्यकताओं की बैठक महर्षि दयानन्द भवन, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली के सभागार में परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निश्चय हुआ कि आगामी ग्रीष्मकालीन अवकाश में नयी युवा पीढ़ी को नैतिक शिक्षा, देश भक्ति की भावना व संस्कारित-चरित्रवान बनाने के लिये युवक व युवतियों के 18 चरित्र निर्माण शिविर दिल्ली, नोएडा, मुजफ्फर नगर, पौढ़ी गढ़वाल, यमुना नगर, करनाल, जीन्द, पलवल, फरीदाबाद, हजारी बाग, समस्ती पुर, जम्मू, उड़ीसा, इन्दौर, कैथल, जयपुर, बहरोड़, मथुरा में लगाये जायेगे।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि चरित्रवान युवा पीढ़ी का निर्माण आज सबसे बड़ी चुनौती है, भौतिकवाद के युग में हर ओर अश्लीलता परोसी जा रही है। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम, टी.वी.सीरियल आदि युवा समाज को दिग्भ्रमित करने का कार्य कर रहे है। माता पिता के प्रति बच्चे कर्तव्य हीन होते जा रहे हैं, समाज की संरचना का ताना बाना अपनी स्थापित परम्परायें, मान्यतायें तोड़ रहा है ऐसी गम्भीर स्थिति में आर्य युवक परिषद् ने महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा से ओतप्रोत कर नये समाज के निर्माण की बीड़ा उठाया है। आज की युवा शक्ति जैसी सुसंस्करित व भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत होगी वह वैसे ही समाज का निर्माण करेगी। उन्होने आर्य जनता से तन, मन, धन से इस युवा निर्माण आन्दोलन में सहयोग करने की अपील की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश ने कहा कि अच्छे चरित्रवान लोगों को राजनीति में आना चाहिये, यदि अच्छे लोग राजनीति में नहीं आयेगे तो बुरे लोग स्थान ले लेंगे फिर उन्हें व्यवस्था को दोष देने का कोई अधिकार नहीं है, उन्होंने स्वीकार किया की हमने ''आर्य सभा'' का जनता पार्टी में विलय करके बहुत बड़ी भूल की थी। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि आर्य समाज के कार्यकताओं को राजनीति में खुलकर आना चाहिये इसे अछूत नहीं समझना चाहिये।

परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री महेन्द्र भाई का उनकी सेवाओं के लिये अभिनन्दन किया गया। बैठक को स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (पलवल), आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री, स्वामी सौम्यानन्द जी(मथुरा), बहिन गायत्री मीना (नोएडा), प्रमोद चौधरी (गाजियाबाद), यशोवीर आर्य, धर्मपाल आर्य, मनोहर लाल चावला (सोनीपत), मनोज सुमन (फरीदाबाद), रामकृष्ण शास्त्री (बहरोड़), रणसिंह राणा, वेदप्रभा बरेजा, अर्चना पुष्करना, अनिता कुमार, चतरसिंह नागर, सुशील आर्य, जीवनप्रकाश शास्त्री, चन्द्रदेव शास्त्री, रामकुमार सिंह, देवेन्द्र भगत, सुरेश आर्य, शिशुपाल आर्य, ममता चौहान, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, गोपाल जैन, अनिल हान्डा, हरिचन्द आर्य, विजय सबरवाल, ओमबीर सिंह, श्यामसिंह यादव, प्रकाशवीर शास्त्री, रमेश योगाचार्य, हीराप्रसाद शास्त्री, महेन्द्र टांक आदि ने भी सम्बोधित किया। प्रात: 11 से दोपहर 3.30 बजे तक चली बैठक के पश्चात प्रीति भोज का आनन्द लेकर सभी एक नये उन्साह के साथ विदा हुए।

परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेन्द्र भाई का अभिनन्दन करते स्वामी अग्निवेश जी, डा.अनिल आर्य, श्री मनोहरलाल चावला, माता लक्ष्मी सिन्हा, सुशील आर्य, अनिल हाण्डा, रामकुमार सिंह, यशोवीर आर्य। द्वितीय चित्र में सार्वदेशिक सभा मुख्यालय में बैठक का सुन्दर द्रश्य।

'श्रेय मार्ग के पथिक स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती' -मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती का नाम मुख पर आते ही एक भव्य मूर्ति आंखों के सामने उपस्थित हो जाती है जिसने काषाय वस्त्र धारण किये हुए हैं। लगभग 5.5 से 6.0 फीट के बीच जिसकी लम्बाई है, गोरा उज्जवल चेहरा, सिर पर लम्बे सफेद बाल व लम्बी सफेद दाढ़ी-मूछें, वाणी में कोमलता, विनम्रता, मधुरता, अमृत घुला हुआ सा, अग्निहोत्र यज्ञों के प्रेरक, वैदिक धर्म के प्रेमी व अनुयायी, वृहत वेद पारायण यज्ञों के ब्रह्मा, सत्यार्थभृत-राष्ट्रभृत-विश्वभृत यज्ञों के प्रणेता, आर्य समाज के दिग्गज विद्वानों के शोधपूर्ण एवं महत्वपूर्ण प्रमुख ग्रन्थों के प्रकाशक आदि उनके गुण हृदय में उपस्थित हो जाते हैं। हमने स्वामीजी के प्रवचनों को सुना है, उनसे भेंट व वार्तालाप किया है। उनकी वाणी में जादू था। जब वह बोलते थे तो श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। यज्ञ की ऐसी व्याख्या करते थे कि ऐसा लगता था कि हम वेद के अमृत सरोवर में स्नान कर रहे हैं और वेद के अमृत जल से हमारा सारा जीवन पवित्र हो गया है। उनके प्रवचन सुन कर लगता था कि उन्होंने वाणी व विद्या की देवी सरस्वती को सिद्ध कर रखा है। उनका एक-एक शब्द हृदय पर प्रभाव डालता था और श्रोता यह चाहता था कि यह अमृत का झरना बन्द न हो, झरता व बहता रहे, वेद ज्ञान की अमृत वर्षा होती रहे, थमे व रूके नहीं। यद्यपि संसार में मृत्यु का नियम बहुत अच्छा बना है। परन्तु जब कोई देश भक्त, ज्ञानी व ध्यानी, वेद प्रचारक, ईश्वर का सच्चा उपासक, कम से कम आवश्यकताओं में जीवन निर्वाह करने वाला और समाज व देश को वेदों के आध्यात्मिक ज्ञान से भर देने की भावना से ओतप्रोत ज्ञानी, संन्यासी, विद्वान, मनीषी व कर्मयोगी जैसे महर्षि दयानन्द, गुरू विरजानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, पं. रामनाथ वेदालंकार व स्वामी दीक्षानन्दजी आदि इस संसार से विदा होते हैं तो आत्मा को धक्का लगता है। उस समय मृत्यु का विधान कुछ ठीक नहीं लगता। यह लोग जीवित व स्वस्थ होते तो देश व समाज का बहुत बड़ा काम कर सकते थे। इनके चले जाने से वेद प्रचार व कृण्वन्तो विश्वार्यम का कार्य बाधित हुआ। हम लक्ष्य पर पहुंचने से पहले ही रूक गये और लक्ष्य जो शीघ्र प्राप्त हो सकता था वह हमसे लगता है कि दूर हो गया। हमें लगता है कि परमात्मा अपनी न्याय व्यवस्था में किसी के साथ बिल्कुल भी पक्षपात नहीं करता है। वह वस्तुतः न्याय को धारण किये हुए है। चाहे धर्मात्मा हो या दुष्टात्मा, उसका न्याय सबके लिए एक समान है। स्वामी दीक्षानन्द भी आर्य समाज में एक आचार्य, विद्वान, विचारक, चिन्तक, धर्मगुरू, पुरोहित, धर्म व वेद प्रचारक एवं वेदों के प्रचारक की भूमिका में थे। उनके जाने से समाज को भारी क्षति हुई। खेद है कि उन जैसा व्यक्तित्व आज हमारे पास नहीं है। अन्य जो हैं वह कुछ कम नहीं हैं परन्तु स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती तो एक ही थे। उनकी उपमा किसी से नहीं दे सकते। उनका व्यक्तित्व unique था। आज उनको याद करके ऐसा लगता है कि हमने उनके समय में उनको जाना नहीं अन्यथा कुछ दिन उनके साथ रहकर हम उन्हें नजदीक से देख कर उनसे बातचीत करके बहुत कुछ ग्रहण कर सकते थे।

स्वामी दीक्षानन्द जी का जन्म 11 जून 1918 को जिला भिवानी मे हुआ। बचपन का नाम ''कृष्ण स्वरूप'' था। माता का घसीटी देवी एवं पिता का नाम आनन्द स्वरूप था। श्री बालस्वरूप आपके ताऊजी थे। ताऊजी दैनिक यज्ञ करने वाले आर्य समाज के अनुयायी थे। वह आर्य समाज के सत्संगों में बच्चों को लेकर जाते थे और आजादी के आन्दोलन से सम्बन्धित भाषणों में भी सभी बच्चों को लेकर जाते थे। आपके पिता पुलिस विभाग में अधिकारी थे। आपका एक भाई व एक बहिन थे। बहिन का देहान्त बहुत छोटी आयु में हो गया था। जब आप 5 वर्ष के थे, तो माताजी का देहान्त हो गया। आपका पालन पोषण ताऊजी के परिवार में रहकर हुआ। सात वर्ष की आयु में पिता ने आपको एक गुरूकुल में प्रविष्ट करा दिया। आपने गुरूकुल में 4 वर्ष रहकर अध्ययन किया। कक्षा 9 तक आप उर्दू माध्यम से इण्डस्ट्रीयल स्कूल में पढ़े जहां आपके मौसाजी प्रिंसीपल थे। इसके बाद आप ताऊजी के पास दिल्ली आ गये और एक कारखाने में फर्नीचर बनाने का काम करने लगे। यह काम आपको पसन्द नहीं था।

जब भी अवसर मिलता आप आर्यसमाज दीवानहाल के सत्संग में चले जाते थे और वहां आर्यसमाज के विद्वानों के उपदेश व प्रवचन सुनते थे। इससे आपके मन में विचार आया कि वह भी आर्यसमाज के उपदेशकों की तरह एक प्रचारक बनें। एक बार दीवालहाल के आर्यसमाज के उत्सव के अवसर पर विद्वानों से शोभायमान सुसज्जित मंच पर जाकर आपने श्रोतओं को सम्बोधित करने का सभा के प्रधानजी से अनुरोध किया। आपकी प्रार्थना स्वीकर कर ली गई और लगभग 10 मिनट का समय दिया गया। जीवन में पहली बार युवावस्था में यह उपदेश आपने किया। एक सुन्दर व आकर्षक युवक ने जब ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज के संगठन व सिद्धान्तों पर अपना श्रद्धापूर्ण शब्दों में प्रभावशाली उद्बोधन दिया तो सभी श्रोताओं व मंचस्थ विद्वानों को अच्छा लगा और वह सब उनके द्वारा भविष्य में आर्यसमाज में मुख्य भूमिका के संवरण का स्वप्न देखने लगे। आर्यसमाज दीवानहाल के पुरोहित पण्डित वीरेन्द्रजी की प्रेरणा से आप संस्कृत व अन्य विषयों के अध्ययन के लिए ''श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय, लाहौर'' आ गये और यहां रहकर अध्ययन पूरा किया। यहां अध्ययन पूरा कर आप ''आचार्य कृष्ण'' के नाम से बाहर आये और आर्यसमाज को समर्पित हो गये। सन् 1943 में आचार्य कृष्ण ने आचार्य प्रियव्रत वाचस्पति की अनुमति से एक गुरूकुल वा उपदेशक विद्यालय भटिण्डा में स्थापित किया। इसके 5 वर्ष पश्चात सन् 1948 में पं. बुद्धदेव विद्यालंकार, आचार्य विश्वश्रवा एवं स्वामी अमरस्वामी विद्यालय में आये और विद्यार्थियों की परीक्षा ली। विद्यार्थियों की योग्यता को देखकर तीनों ही आर्य पुरूष अत्यन्त प्रसन्न व प्रभावित हुए। आचार्य बुद्धदेवजी ने आचार्य कृष्ण को गुरूकुल प्रभात आश्रम में जाकर उनके गुरूकुल को चलाने के लिए अनुरोध किया। इन्हीं दिनों आचार्य कृष्ण के परिवार के लोग उन्हें गृहस्थी बनाने को उत्सुक थे। आचार्य कृष्ण में गृहस्थी होने की इच्छा नहीं थी, इसी कारण वह जीवन भर इस बन्धन से दूर रहे। गुरू की आज्ञा का पालन आपने भटिण्डा से प्रभात आश्रम, मेरठ में जाकर वहां अध्यापन कराकर किया।

धर्मरक्षा के लिए अपने सभी सुखों का त्याग व प्राणों तक को बलिदान करने की परम्परा देशभक्तों व धर्मभक्तों में रही है। बाल हकीकत राय व गुरू गोविन्द सिंह जी के उदाहरण हमारे सामने हैं। सन् 1938 में हैदराबाद रियासत में आर्य समाज को धर्म रक्षा हेतु वहां वृहत स्तर पर धर्म रक्षा आन्दोलन व सत्याग्रह करके करना पड़ा। इसका मुख्य कारण था कि हैदराबाद के निजाम ने हिन्दुओं के सभी धार्मिक अधिकार छीन लिये थे। वहां मन्दिर में घण्टे नहीं बजाये जा सकते थे, सत्संग व कथा नहीं कर सकते थे व वेद प्रचार भी नहीं कर सकते थे। हवन कुण्ड व ओउम् के झण्डे पर भी प्रतिबन्ध था। ऐसे अनेक प्रतिबन्ध हिन्दुओं पर लाद दिये गये थे। इस धर्म रक्षा अभियान में अपनी आहुति देने के लिए 21 वर्षीय आचार्य कृष्ण पंजाब से दिल्ली तथा यहां से सोलापुर पहुंचे और फिर हैदराबाद पहुंचकर आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के मन्त्री श्री ज्ञानचन्द्र के नेतृत्व में 26 मार्च, 1939 को रायचूर में सत्याग्रह किया और अपनी गिरिफ्तारी दी। उन्हें कारावास भेज दिया गया। लेज में उन्हें आटे में सीमेन्ट मिली हुई रोटी खाने को दी गई जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। धर्मरक्षा के लिए उनके भावों, विचारों व जज्बे को हम प्रणाम करते हैं। आज की युवा पीढ़ी में ऐसे विचार नदारद हो गये लगते हैं। वेदों के लिए तड़फ व उसके लिए प्राणों की आहुति देने की भावना वर्तमान में समाप्त हो रही है या प्रायः हो चुकी है। आधुनिकता व पाश्चात्म विकृत संस्कृति ने हमारे युवकों को अपने आगोश में ले लिया लगता है। इस हैदराबाद सत्याग्रह में आर्य समाज की विजय हुई। आज हैदराबाद भारत का अंग है इसका मुख्य श्रेय आर्य समाज के उक्त सत्याग्रह को है। ऐसा विचार भारत के प्रथम गृहमंत्री सरदार पटेल का था। उन्होंने कहा था कि यदि आर्य समाज भूमिका तैयार न करता तो हैदराबाद का भारत में विलय कठिन होता। हमारा विचार है कि इसका श्रेय सरदार पटेल व आर्यसमाज दोनों को है।

पंजाब राज्य में जब हिन्दी पर शिकंजा जकड़ा गया तो हिन्दी की रक्षा के लिए आन्दोलन की बागडोर आर्य समाज ने सम्भाली। सन् 1957 में आर्य समाज द्वारा आहूत हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में आर्चाय कृष्ण ने 700 सत्याग्रहियों के जत्थे का नेतृत्व किया। चण्डीगढ़ पहुंच कर आपने पंजाब के करोड़ों नागरिकों की मातृभाषा हिन्दी के समर्थन में जोशीले भाषण दिये और पंजाब सरकार की आलोचना करने के साथ हिन्दी के प्रति पक्षपात व अन्याय को दूर करने की मांग की। दिल्ली के प्रसिद्ध गोरक्षा आन्दोलन में भी आपने सनातन धर्म के नेता स्वामी करपात्री आदि के साथ मिलकर सक्रिय सहयोग किया।

स्वामी दीक्षानन्द जी महर्षि दयानन्द व प्राचीन ऋषियों की वेदाध्ययन व भूमण्डल पर वेद प्रचार की परम्परा के अनुगामी थे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपने देश भर में भ्रमण कर प्रवचन, उपदेश व व्याख्यान देकर प्रचार का कार्य किया। वह वैदिक ज्ञान से परिपूर्ण थे, उनकी भाषा व वाणी में मधुरता व सरसता होने के साथ अमृत घुला हुआ होता था, वह वाणी के जादूगर थे और प्रभावशाली वक्ता व आकर्षक व्यक्तित्व वाले विद्वान व संन्यासी थे। आपने उत्तर प्रदेश, दिल्ली, आन्ध प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब आदि अनेकानेक प्रदेशों व स्थानों पर जाकर वेद की ज्ञान-गंगा को प्रवाहित किया। एक बार कुम्भ के अवसर पर उज्जैन में 'सर्व-धर्म-सम्मेलन का आयोजन किया गया जहां आर्य समाज का प्रतिनिधित्व स्वामी दीक्षानन्द जी ने किया। भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी इस आयोजन में पधारे थे। अन्य मतों के विद्वानों व संन्यासियों ने ज्ञानी जैल सिह जी के गले में फूल मालाओं को पहनाकर उनका अभिनन्दन किया। जब स्वामी दीक्षानन्द जी का बारी आई तो आपने माईक पर उपस्थित होकर कहा कि मैं वैदिक संन्यासी हूं और आर्य धर्म की मर्यादाओं से बन्धा हूं। मैंने सब कुछ त्याग दिया है। मेरे द्वारा किसी को फूल प्रदान करना मर्यादा में नहीं है। मैं तो राष्ट्रपति महोदय को अपना आर्शीवाद ही प्रदान कर सकता हूं। ज्ञानी जैल सिंह स्वामी जी की भावनाओं को समझ गये और स्वयं उनके सम्मुख उपस्थित होकर उनसे आर्शीवाद लिया और मंचस्थ सभी संन्यासियों से भी आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके कुछ समय बाद 'विश्व योग सम्मेलन' का आयोजन हुआ जहां ज्ञानी जैल सिंह जी ने उन्हें ''योग शिरोमणी'' की उपाधि से अलंकृत व सम्मानित किया। सन् 1975 में आचार्य कृष्ण ने 'आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह, दिल्ली' में आर्य जगत के विख्यात संन्यासी डा. सत्य प्रकाश जी से संन्यास ग्रहण किया और स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती नया नाम पाया। इस समय आपकी आयु 57 वर्ष की थी। उत्तर काल में आपने भी स्वामी संकल्पानन्द जी को सन्यास धारण कराया और अपने दीक्षा गुरू की शिष्य परम्परा को संवृद्ध किया। सन् 2001 में दूरदर्शन व आस्था चैनल से आपके प्रवचनों की श्रृंखला का भी प्रसारण हुआ था जिसका अच्छा प्रभाव हुआ था। **(शेष अगले अंक में)**

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ ओ३म् ॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

के तत्वावधान में

युवा शक्ति को चरित्रवान, देशभक्त, ईश्वर भक्त, सस्कारवान बनाने का अभियान

ओ३म्
बलमुपास्व

1. राष्ट्रीय युवक चरित्र निर्माण शिविर

शनिवार 7 जून से रविवार 15 जून 2014 तक
स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा
सम्पर्क : श्री संतोष शास्त्री - 9868754140, श्री प्रवीन आर्य - 9911404423

2. दिल्ली आर्य कन्या शिविर

दिनांक 11 मई से 18 मई 2014 तक.
स्थान : आर्य समाज, विशाखा एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली
सम्पर्क-रचना आहूजा-9311175772, अर्चना पुष्करना-9899555280
उर्मिला आर्या-9711161843, सुषमा अरोड़ा-9711137590

3. उड़ीसा आर्य युवक शिविर

दिनांक 2 मई से 10 मई 2014 तक
स्थान : गुरूकुल वेद व्यास, राउरकेला, उड़ीसा
सम्पर्क : आचार्य धनेश्वर बेहरा - 09438441227

4. राजस्थान युवक निर्माण शिविर

दिनांक 25 मई से 1 जून 2014 तक
स्थान-डी.वी.एम. पब्लिक स्कूल, बहरोड
श्री रामकृष्ण शास्त्री-09461405709, मा.सत्यपाल आर्य-09001982643

5. फरीदाबाद युवक निर्माण शिविर

दिनांक 1 जून से 8 जून 2014 तक
स्थान : राजकीय उच्च.मा.विद्यालय, एन.एच-3
फरीदाबाद (हरियाणा)
सम्पर्क : श्री सत्यपाल शास्त्री - 09810464750
सत्यभूषण आर्य-9818897097, मनोज सुमन-9810064899

6. पलवल युवक निर्माण शिविर

दिनांक 9 जून से 15 जून 2014 तक
स्थान : महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र, वन्चारी,
होडल, पलवल (हरियाणा)
सम्पर्क : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, फोन-09416267482

7. मध्यप्रदेश युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 25 मई से 1 जून 2014 तक
स्थान : आर्य समाज, 219 संचार नगर, इन्दौर
सम्पर्क :- आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
फोन : 09977967777, 0731-3259217

8. यमुना नगर आर्य कन्या शिविर

दिनांक 2 जून से 8 जून 2014 तक
स्थान:वैदिक वृद्व संन्यास आश्रम, जगाधरी वर्क्स शॉप रोड,
यमुनानगर (हरियाणा). स्वामी सच्चिदानन्द जी-09416395561,
श्री मनोहरलाल चावला, फोन : 09813514699

9. उत्तराखण्ड युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 28 मई से 3 जून 2014 तक
स्थान : गुरूकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार,पौड़ी गढ़वाल
सम्पर्क : योगीराज ब्र.विश्वपाल जयन्त - 09837162511

10. करनाल युवक निर्माण शिविर

दिनांक 18 जून से 22 जून 2014 तक
स्थान : आर्य समाज, प्रेम नगर,करनाल (हरियाणा)
स्वतन्त्र कुकरेजा-09813041360, हरेन्द्र चौधरी-09541555000,
रजनीश चोपड़ा-9813073173

11. जम्मू युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 23 जून से 29 जून 2014 तक
स्थान : आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू
सम्पर्क : श्री सुभाष आर्य, फोन - 09419301915

12. जीन्द युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 18 मई से 25 मई 2014 तक
स्थान : जय भारत हाई स्कूल, रोहतक रोड़, जीन्द
सम्पर्क : श्री योगेन्द्र शास्त्री, फोन : 09416138045

13. झारखण्ड आर्य कन्या निर्माण शिविर

दिनांक 18 मई से 2 जून 2014 तक
स्थान : डी.ए.वी.नन्दराज, रांची
सम्पर्क : आचार्य कृष्णप्रसाद कौटिल्य - 09430309525
श्री पूर्णचन्द आर्य - 09431535364

14. जयपुर युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 16 जून से 22 जून 2014 तक
स्थान : संस्कार छात्रावास, जी.एल.सैनी कॉलेज आफ नर्सिंग
7-8, राधा निकुन्ज सी., रामपुरा मोहनपुरा रोड, केसरनगर चौराहे
के पास, जयपुर. सम्पर्क : यशपाल यश-09875035146

15. कैथल आर्य मानव निर्माण शिविर

दिनांक 1 जून से 8 जून 2014 तक
स्थान : गुरू ब्रह्मानन्द आश्रम, पुण्डरी, कैथल
सम्पर्क : श्री राजेश्वर मुनि जी - 09896960064

16. यमुना नगर युवक निर्माण शिविर

दिनांक 1 जून से 8 जून 2014 तक
स्थान : यमुना नगर, हरियाणा
सम्पर्क : श्री गोपाल शर्मा - 09467956050

17. बिहार युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 22 जून से 29 जून 2014 तक
स्थान : आर्य समाज, समस्तीपुर, बिहार
सम्पर्क : आचार्य नवलकिशोर जी - 09771257878
श्री भारतेन्दू आर्य - 09430099239

18. उत्तर प्रदेश युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 7 जुलाई से 13 जुलाई 2014 तक
स्थान : गुरूकुल संस्कृत महाविद्यालय,शुक्रताल, मुजफ्फरनगर
सम्पर्क : आचार्य पवनवीर जी - 09639661532

सभी शिविरों के 'समापन समारोह' पर दल बल सहित पहुंचे व तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें

निवेदक

डा० अनिल आर्य	यशोवीर आर्य	रामकुमार सिंह	महेन्द्र भाई	धर्मपालआर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
9810117464	9312223472	9868064422	9013137070	9871581398

केन्द्रीय कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली -110007. फोन - 9868661680
Email: aryayouth@gmail.com • Website : www.aryayuvakparishad.com Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

उ.प्र.प्रान्तीय बैठक गांधी नगर में व साहिबाबाद लाजपत नगर का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 20 अप्रैल 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उतर प्रदेश की बैठक प्रदेश अध्यक्ष श्री आनन्द प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में आर्य समाज, गांधी नगर, गाजियाबाद में सम्पन्न हुई। चित्र में सम्बोधित करते डा. अनिल आर्य, साथ में उतराखण्ड के प्रदेश अध्यक्ष ब्र. विश्वपाल जयन्त (पौढ़ी गढ़वाल), श्री प्रवीन आर्य, आचार्य रामनिवास शास्त्री व श्री तेजपालसिंह आर्य। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, लाजपत नगर, साहिबाबाद के वार्षिकोत्सव पर डा. अनिल आर्य के साथ आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री, ओमप्रकाश आर्य, श्रद्धानन्द शर्मा, मायाप्रकाश त्यागी, सत्यवीर चौधरी, रामकुमार सिंह, सुरेश आर्य, तेजपालसिंह आर्य।

आर्य समाज, सुन्दर विहार व रोहिणी सैक्टर-11 का वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न

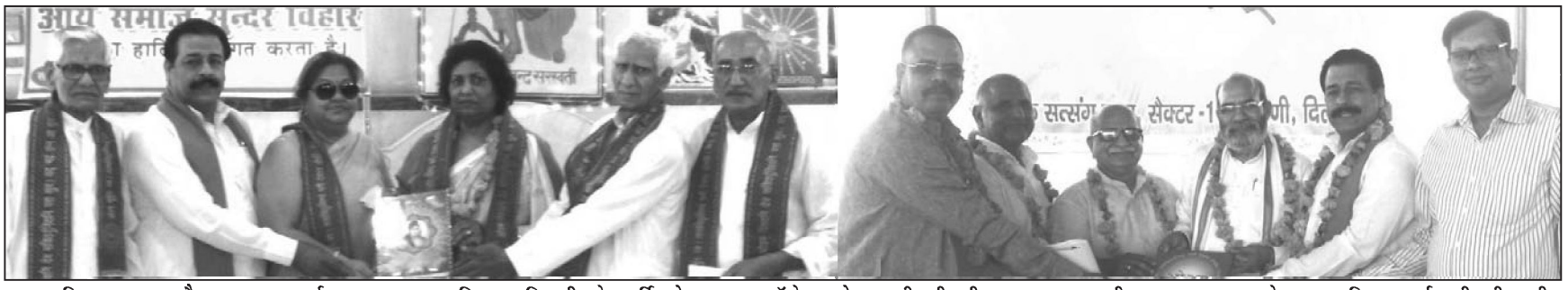

रविवार, 20 अप्रैल 2014, आर्य समाज, सुन्दर विहार, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर हॉलेन्ड से पधारी श्रीमती शकुन्तला चुन्नी का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, श्रीमती प्रवीन आर्या, श्री जगदीश वर्मा, प्रधान श्री कंवरभान खेत्रपाल व मंत्री श्री अमरनाथ बत्रा। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली के उत्सव पर आचार्य शिवनारायण शास्त्री का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, प्रधान श्री विजय आर्य, श्री कांतिप्रकाश अग्रवाल, श्री रणसिंह राणा व श्री ओमप्रकाश गुप्ता।

आर्य समाज, वजीरपुर जे.जे.कालोनी व दुर्गापुरी शाहदरा का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 20 अप्रैल 2014, आर्य समाज, वजीरपुर जे.जे.कालोनी, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर मंत्री श्री भूदेव आर्य का स्वागत करते डा. अनिल आर्य, प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री ओम सपरा, श्री रामहेत आर्य, प्रवीन आर्या, आचार्य अभयदेव शास्त्री व संयोजक श्री सन्तोष शास्त्री। प्रबन्ध श्री वीरेश आर्य, राधेश्याम जी ने सम्भाला। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, दुर्गापुरी विस्तार, शाहदरा,दिल्ली के उत्सव पर डा. अनिल आर्य को स्मृति चिन्ह भेंट करते श्री हरबीरसिंह आर्य व श्री ईश्वरसिंह आर्य। अंजली आर्या के मधुर भजन सभी ने पसन्द किये। संचालन प्रधान श्री प्रीतमसिंह प्रियतम ने किया व मंत्री श्री नरेन्द्र आर्य, श्री रामकुमार सिंह, श्री रामपाल एडवोकेट, श्री वेदप्रकाश आर्य आदि ने व्यवस्था सम्भाली।

।। ओ३म् ।।
अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट
11वां स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस
रविवार, 11 मई 2014, प्रातः 6:30 से 1:30 बजे तक
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून
आशीर्वाद
स्वामी चितेश्वरानन्द जी सरस्वती
मुख्य अतिथि
माननीय श्री बृजमोहन लाल मुन्जाल (चेयरमैन, हीरो मोटो कॉर्प)
रोहण — श्री ार अग्निहोत्री
अध्यक्षता — स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज
ध्वज
मुख्य वक्ता
डॉदर्शन कुम्ल कथुरिया ❀ आचार्य विद्यादेव जी ❀ आचार्य आशीष जी
मधुर भजन : श्री इन्दुप्रकाश जी त्रिवेदी
ा. सुन्दरला
विशिष्ट अतिथि
डॉ. प्ता — श्री योगराज अरोड़ा — श्री योगेश मुन्जाल — श्री रामभज मदान
श्री आर्य — श्री चमनलाल रामपाल — श्री विक्रम बावा — श्री मनीष बावा
डॉ. वेद प्रकाश गु — श्री राकेश भटनागर — श्री श्रद्धानन्द शर्मा — श्री सुनील गर्ग
दिनेशकुमार
अभिनन्दन समारोह
❀ डॉ. सुनील रहेज कथुरिया को स्वामी दीक्षानन्द जी की स्मृति में "वेदश्री सम्मान"
❀ श्री ना को महात्मा प्रभुआश्रित जी की स्मृति में "वेद मित्र सम्मान"
❀ पं. सुन्दरलाल आर्य को माता शान्तिदेवी गणेशदास अग्निहोत्री जी की स्मृति में "संरविन्द्र मेहणि सम्मान"
❀ श्रीमरूबेल सिंहगी को श्रीमती कृष्णा महेश रहेजा जी की स्मृति में "आर्य श्रेष्ठी सम्मान"
गीत शिरोमणि श्रद्धांजलि देने आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं
ती उषा ने ऋषि लंगर - दोपहर 1:30 बजे
गुरुदेव व
निवेदक
सरोज मी — ई.प्रेमप्रकाश शर्मा, मन्त्री तपोवन, 09412051586 — डॉ. अनिल आर्य, संयोजक, 9810117464

हापुड़ में आर्य युवकों ने धूम मचाई

शनिवार, 26 अप्रैल 2014, आर्य समाज, हापुड़ के वार्षिकोत्सव पर परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य, श्री रणसिंह राणा, श्रीमती प्रवीन आर्या, श्रीमती हंसा राणा सम्मिलित हुए। चित्र में शिक्षक श्री सौरभ गुप्ता की टीम का उत्साह बढ़ाते श्री महेन्द्र भाई, श्री रामकुमार सिंह आदि।

शोक समाचार- माता सुदर्शन खन्ना नहीं रही

आर्य युवको की प्रिय माता श्रीमती सुदर्शन खन्ना (आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश-2, नई दिल्ली) का गत दिनो निधन हो गया। **युवा उद्घोष की ओर से माता जी को विनम्र श्रद्धांजलि।**

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970